- झा, द्विजेन्द्र नारायण ''प्राचीन भारत''
- आर0सी0 मजूमदार Ancient India
- कनिघंम, अलेक्जेंडर "The Ancient Geography of India"
- Tiwari, Pushpa, "Ornament as depicted in the sculptures of Northern India from 2nd cent. B.C

वाल्स) का विधान था। इनका निर्माण अनाधिकारी व्यक्तियों तथा चोरों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए किया गया था। इन गलियों को रात्रि में और आपातकाल में बन्द कर दिया जाता था। मकानों का निर्माण पंक्तिबद्ध ढंग से किया गया था प्रत्येक मकान दो खण्डों में विभक्त था जो दो दरवाजों (विहारों और भीतरी) से युक्त था। उत्खनन में बड़ी संख्या में खपरैल तथा खुली और ढकी नालियों के अवशेष भी मिलते हैं। मकानों से दूषित जल के निकलने की भीव्यवस्था थी। उत्खनन में तदर्थ पकी ईंटों से निर्मित पाइप की नाली थी, मिली हैं। इस प्रकार के नाली से कई लाभ थे। इनके चारो ओर बन्द होने के कारण गंदगी के फैलने का कोई भय नहीं रहता था। स्वच्छता की व्यवस्था के लिए यहाँ के निवासियों ने कई उपाय किये थे। यहाँ की खुदाई से तीन सोख्ता घड़े मिले हैं। ये मिट्टी के बड़े घड़े होते थे जिनकी पेंदी में छेद करके इन्हें एक–दूसरे के ऊपर रख देते थे। सबसे निचले घड़े के नीचे ईंटें रखी जाती थी। नालियों द्वारा सबसे ऊपरी घड़े में मल तथा घर की गन्दगी इकट्ठा होती थी। ऐसे ही घड़े तक्षशिला और हस्तिनापुर कीखुदाईयों में भी मिले हैं। कौशाम्बी से प्राप्त सोख्ता घड़े कभी–कभी घर के पृष्ठभाग में भी रखे हुए मिलते हैं। इस प्रकार की व्यवस्था अन्य स्थानों पर भी रही होगी। उल्लेखनीय है कि साहित्य में भी गृह के पृष्ठभाग में मल–निर्हरण के लिए इसे बनाने का निर्देश है। राज्य की ओर से भी ऐसे घड़े सड़कों के किनारे तथा गलियों में एक चबूतरों के पास रखे जाते थे। इसके अतिरिक्त मृतिकावलय कूपों (रिंगवेल्स) का भी निर्माण किया जाता था। कौशाम्बी की खुदाई में ऐसे मृतिकावलय कूप काफी संख्या में मिले हैं। इसी प्रकार के मृतिकावलय कूप तक्षशिला, हस्तिनापुर, अहिच्छत्र तथा राजघाट की खुदाईयों से काफी संख्या में प्राप्त हुए हैं। इनको बनाने के लिए गड्ढ़ा खोदकर तीनफुट व्यास की चकरियाँ एक के ऊपरएक रख दी जाती थी। कौशाम्बी से मिले मृतिकावलय कूपों में चकरियों की संख्या 25 है। कौशाम्बी के खण्डहरों से एक ही जगह तीन मृतिकावलय कूप मिले हैं। इस प्रकार के निर्माण का भी एक विशेष कारण रहा होगा। सम्भवतः सर्वप्रथम एक मृतिकावलय प्रयोग में लाया गया होगा। उसके भर जाने के पश्चात उसे सूखने के लिए छोड़कर दूसरे तथा तीसरे मृतिकावलय कूप का प्रयोग किया गया होगा। कौशाम्बी के उत्खनन से बड़ी मात्रा में लौहउपकरण, मिट्टी के बर्तन, मिट्टी और धातु की मूर्तियाँ, सिक्के, मुहरें, अभिलेख, राजमहल, सुरक्षा प्राचीर आदि प्राप्त हुए हैं। जिससे प्राचीन कौशाम्बी के महत्व की जानकारी प्राप्त होती है। कौशाम्बी से प्राप्त मृण्मूर्तियों में गजलक्ष्मी तथा हरीति का विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। उत्खनन से मानव और पशुओं की मिट्टी की बनी छोटी मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इसके अतिरिक्त बहुत बड़ी संख्या में शरीर के विविध अवयव क`खण्ड भी मिले हैं।

द्वितीयक स्रोत

- एन0एन0 घोष An early history of Kaushambi",Allahabad (1935)
- एस0सी0 काला Terracotta Figurince From Kaushambi",Allahabad (1950)
- त्रिपाठी, अरूणा The Buddhist Art of Kaushambi
- लॉ, बी0सी0 Kaushambi in Ancient Literature

तथा शक–पार्थियन काल में अधिक किया गया था। इन मूर्तियों में मात्देवी, मृदंगवादक, गजलक्ष्मी तथा हरीति की मूर्तियाँ उल्लेखनीय हैं। विहार क्षेत्र से प्राप्त सिक्को में रजत और ताम्र निर्मित आहत सिक्के, लेखरहित ढले सिक्के, कौशाम्बी के स्थानीय सिक्के, कुषाण तथा महाराजाओं के सिक्कों की गणना की जा सकती है। बहुमूल्य प्रस्तर तथा हड्डी से बने मनके भी प्राप्त हुए हैं। अभिलेखों में नन्दियशा का अभिलेख, आयागपट्ट, शतदल प्रदीप लेख आदि प्रमुख हैं। अयागपट्ट अभिलेख के अनुसार भदन्तधर के शिष्य भिक्षु फगल ने घोषिताराम में सभी बुद्धों की पूजा के लिए शिला स्थापित कराई थी। कौशाम्बी नगर के भग्नावशेष 6.45 किमी0 भाग में फैले हैं जिनका एक भाग किलाबंदी कीजटिल प्रणाली से सुरक्षित है। प्राचीन परकोटा के टीले, एक खाई से घिरे हुए यमुना के आधार के रूप में एक अर्द्धघेरे बनाते हैं। परकोटे लगभग 4 मील की परिधि का निर्माण करते हैं। परकोटे की औसत ऊँचाई लगभग 35 फुट है तथा बुर्ज 70 से 75 फुट तक ऊँचे हैं। नगर के तीन ओर पूर्व, उत्तर तथा पश्चिम प्रवेश द्वार का विधान था। दक्षिणी प्रवेश द्वार के अवशेष यमुना द्वारा बहा दिये जाने के कारण नहीं मिल सके हैं। परकोटों के अतिरिक्त सम्पूर्ण नगर तीन ओर से एक खाई अथवापरिखा द्वारा घिरा हुआ था। इस भाग में परिखा की अधिकतम चौड़ाई 1600 फुट है। पूर्वी द्वार पर एक मिट्टी का बांध है जो द्वार के लिए एक पर्दे का काम करता था इसकी अधिकतम लम्बाई और चौड़ाई 350 और 90 फुट थी। इस बांध और परकोटे के बीच एक 25 फुट का मार्ग था। 1960 ई0 में दक्षिण– पश्चिम दिशा में किये गये उत्खनन द्वारा राजप्रसाद को प्रकाश में लाया गया। इस भवन की विशालता और प्रस्तर पर प्राप्त अलंकरण आदि के आधार पर इसे राजप्रसाद का नाम दिया गया है। यह प्रसाद वृत्ताकार है। इसकी दो दीवारे समानान्तर हैं किन्तु शेष दो थोड़ी घूमी हुई हैं। उत्तर–पूर्व, उत्तर–पश्चिम तथा दक्षिण–पूर्व की ओर गोलाकार बुर्ज है। राजप्रसाद तीन ओर से प्रस्तर निर्मित ऊँची सुरक्षा प्राचीर से घिरा हुआ था साथ ही राजमहल और प्राचीर के बीच सूखी खाई भी थी। राजमहल की दीवारों का निर्माणचार भिन्न अवस्थाओं में किया गया था। प्रथम काल में(लगभगआठवीं से छठीं शताब्दी ई0पू0) अनगढ़ प्रस्तर खण्ड़ों द्वारा दीवार का निर्माण किया गया था। द्वितीय काल में दीवार पर गढ़े हुए आयाताकार प्रस्तर खण्ड लगाये गये थे। किन्तु इनका प्रयोग केवल बाहर की ओर किया गया था। अन्दर की ओर अब भी अनगढ़ प्रस्तर खण्ड लगाये गये थे। इस काल की तिथि छठीं शताब्दी ई0पू0 से द्वितीय शताब्दी ई0पू0 मानी जाती है। तृतीय काल में अन्दरूनी भाग में पत्थर का किन्तु बाहरी ओर ईंटों का प्रयोग किया गया। इस काल की तिथि द्वितीय शताब्दी ई0पू0 से प्रथम शताब्दी ई0पू0केमध्य मानी जाती है। चतुर्थ काल में अनगढ़ प्रस्तर खण्डों का ईंटों के साथ प्रयोग दिखाई देता है। किन्तु ये ईंटें भी टूटी हुई हैं। इनके ऊपर मोटा प्लास्तर किया गया है। इस काल का निर्माण प्रथम शताब्दी ई0पू0 से द्वितीय शताब्दी ई0 के मध्य निर्धारित किया गया है। उत्खनन से नगर के प्रारम्भिक विकास के प्रारूप ज्ञात होता है। सड़के नगर के सभी प्रमुख स्थानों को एक–दूसरे से जोड़ती थी। अशोक स्तम्भ इसके मध्य अवस्थित था। उपलब्ध साक्ष्यों के अनुसार इस नगर के परिक्षेत्र में निवास करने वाले लोगों का बसाव क्रमशः चौथी शताब्दी ई0पू0 के मध्य से चौथी शताब्दी के मध्य हुआ होगा। उत्खनित क्षेत्र की गलियों में अनुप्रस्थ दीवालों (क्रास

शिष्य आकर अपनी रोगमुक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। इस स्तूप के निकट एक विषैले नाग का निवास भवन पत्थर का बना हुआ था जहाँ बुद्ध ने नाग को परास्त करके अपनी परछाई को छोड़ दिया था। यद्यपि इस स्थान की यह कथा बहुत प्रसिद्ध है, परन्तु उस परछाई के दर्शन अब नहीं होते।कौशाम्बी को भारतीय पुरातत्व के मानचित्र पर रखने का श्रेय भारतीय पुरातत्व के जनक अलेक्जेंडर कनिघंम को है जिन्होंने 1861 ई0 में यहाँ की यात्रा की और वर्तमान कोसम को कौशाम्बी से समीकृत किया। प्राचीन कौशाम्बी नगर के भग्नावशेष यमुना नदी के बाये तट पर इलाहाबाद के 51 किमी0दक्षिण–पश्चिम दिशा में विद्यमान है। कौशाम्बी के उत्खनन द्वारा मुख्य रूप से वहाँ के अशोक स्तम्भ क्षेत्र, सुरक्षा प्रचीर, घोषिताराम विहार और राजप्रसाद के विभिन्नकालों में विकास, परिवर्तन और परिवर्धन को स्पष्ट किया गया है। यहाँ से प्राप्त टीले में आयताकार रूप में सुरक्षा प्रचीर का विस्तार छिपा था। अशोक स्तम्भ को प्रकाश में लाने का श्रेय एन0जी0 मजूमदार को जाता है यह कौशाम्बी के टीले के मध्य भाग में उत्खनन द्वारा प्राप्त हुआ था। इस क्षेत्र को अशोक स्तम्भ क्षेत्र कहा गया है। अशोक स्तम्भ खण्डित अवस्था में प्राप्त हुआ है जिसका ऊपरी सिरा टूट गया है यह सबसे नीचे 280 सेमी.मोटा है जो लाल बलुआ पत्थर का बना हुआ है। यह स्तम्भ प्राप्ति स्थल पर ही खड़ा कर दिया गया है। यहाँ से प्राप्त मृदभाण्डों में चित्रितधूसर, उत्तरीकृष्णमार्जित तथा लाल मृदभाण्ड उल्लेखनीय है। भवन निर्माण में कच्ची ईंटों का प्रयोग किया गया है, जबकि बाद के तीन स्तरों में पक्की ईंटों का प्रयोग दिखाई देता है। अशोक स्तम्भ क्षेत्र के चित्रितधूसर मृदभाण्डों के ऊपरी स्तर से उत्तरी कृष्णमार्जित मृदभाण्ड प्राप्त हुए हैं। इस स्तर से सड़कों गलियों, आवासी भवनों और नालियों के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। उत्तरी कृष्णमार्जित मृदभाण्डों के परवर्ती लोग लाल रंग केमृदभाण्डों का प्रयोगकरते थे। इसी स्तर से मित्र शासकों के सिक्के प्राप्त हुए है। विद्वानों का विचार है कि इस क्षेत्र में गुप्त काल तक निवास के प्रमाण मिलते है, साथ ही कुषाण सिक्के भी यहाँ सेप्राप्त हुए हैं। एम0जी0 मजूमदार के पश्चात 1949–50।क्में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर गोवर्धन राय शर्मा द्वारा भी अशोक स्तम्भ के समीपवर्ती क्षेत्रों का उत्खनन कराया गया था। कालान्तर में इन्हीं के नेतृत्व में (1951–56) घोषिताराम मठ की खोज की गई। उत्खनन के फलस्वरूप घोषिताराम विहार प्रकाश में लायागया। इस उत्खनन में सबसे निचली स्तरसेउत्तरी कृष्णमार्जित मृदभाण्डों के टुकड़े प्राप्त हुए हैं। इस विहार का पूर्ण निर्माण छठीं शताब्दी ई0पू0 में हुआ था। प्रारम्भ से लेकर पूर्ण विकसित निर्माण के बीच विस्तार के अनेक क्रम दिखाई देते हैं। पश्चिममुखी इस विहार का अन्तिम स्वरूप विहार एवं चैत्य के रूप में था। इस विहार के प्रवेश द्वार के बगल में हरीति एवं कुबेर की मूर्तियाँ स्थापित थी। उत्तर और पूर्व की दिशा में भिक्षुओं के निवास के लिए कक्ष बने थे, जिनके आगे बरामदे भी थे। पश्चिम की ओर एक खुला आंगन था जहाँ सभा आदि होती रही होगी। विहार के प्रांगण में एक विशाल वर्गाकार स्तूप था साथ ही एक अण्डाकार तथा तीन छोटे–छोटे स्तूपों के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। स्तूपों के अतिरिक्त प्रस्तर की प्रतिमाएं, मृण्मूर्तियाँ, सिक्के, अभिलेख तथा मुहरे आदि भी प्राप्त हुई हैं। यहाँ से प्राप्त मूर्तियाँ अत्यन्त उच्चकोटि की है,जिनका निर्माणप्रथम शताब्दी ई0से पांचवी–छठी शताब्दी ई0 के मध्य किया गया था। मृण्मूर्तियों का निर्माण मौर्य–शुंग

कमलासीन है, जो आधुनिक पद्मप्रभु जैन मन्दिर के पास से प्राप्त की गई थी। जैन पौराणिक कथाओं से ज्ञात होता है कि पद्मप्रभु प्रभाषगिरि में पैदा हुए थे और इस नगर पर शासन भी किया था। उन्होंने यहीं पभोसा (प्रभाषगिरि) में तपस्या भी की थी। भगवान महावीरभी यहाँ एक बार पधारे थे और निर्ग्रंथ धर्म का प्रचलन किया था। जैन ग्रंथ भगवती सूत्र (रचनाकाल 300 ई0पू0 से 600 ई0पू0 के बीच) में भी कौशाम्बी का वर्णन मिलता है। राजगृह, चंपा, श्रावस्ती और हस्तिनापुर के समान यह नगर भी एक व्यापारिक केन्द्र था। इस ग्रन्थ में राजाओं की जो वंशावलियाँ मिलती हैं उनका उल्लेख पुराणों में भी मिलता है। कौशाम्बी के शासक सातनिक और उनकी पत्नी मृगावती भगवान महावीर के भक्त थे। जैन साक्ष्यों से पता चलता है कि अमात्य (मंत्री) भी जैन धर्म के अनुयायी थे। सातनिक का पुत्र और उत्तराधिकारी उदयन भी जैन धर्म का समर्थक था। व्यापारिक केन्द्र के रूप में भी कौशाम्बी का विशद वर्णन जैन ग्रन्थों में मिलता है। कौशाम्बी प्रमुख नदी पत्तन तथा स्थलमार्ग से सभी व्यापारिक केन्द्रों से जुड़ा हुआ था। जलमार्ग द्वारा भिक्षुओं के कौशाम्बी से वैशाली जाने का उल्लेख मिलता है। सुप्रसिद्ध मार्गों के साथ सम्बन्धित होने के कारण कौशाम्बी उत्तर भारत में आयात–निर्यात का प्रमुख केन्द्र बन गया। इस प्रकार जैन साहित्य तत्कालीन व्यापार व्यवस्था का अच्छा चित्रण प्रस्तुत करता है और बौद्ध काल में कौशाम्बी के एक व्यापारिक नगर होने तथा इसके प्रमुख नगरों से वाणिज्य पंथों द्वारा संयुक्त होने की पुष्टि भी करता है।चीनी यात्री फाह्यान ने भी कौशाम्बी नामक स्थल का उल्लेख किया है जो मृगदाय वन (सारनाथ) से तेरह योजन उत्तर–पश्चिम में स्थित था। 629 ई0 से 640 ई0 के बीच भारत आने वाले चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतान्त से ज्ञात होता है कि कौशाम्बी अपनी उपजाऊ मिट्टी के कारण अत्यन्त प्रसिद्ध था यहाँ चावल और गन्ना बहुतायत से होते थे। यहाँ के निवासी धर्म और आस्थाओं में अत्यधिक विश्वास रखते थे। उसने यहाँ के अनेक संघारामों का उल्लेख किया है जो ध्वंसावशेषों के रूप में विद्यमान थे। इससे स्पष्ट होता है कि ह्वेनसांग के कौशाम्बी आगमन के समय तक बौद्ध धर्म अवनति की ओर अग्रसर था। इस तथ्य की पुष्टि पुरातात्विक साक्ष्यों द्वारा भी होती है। ह्वेनसांग के अनुसार यहाँ हीनयान सम्प्रदाय से सम्बन्धित श्रमण निवास करते थे। यहाँ पर 5 से अधिक देव मन्दिर थे जिसमें अबौद्धों की संख्या कम थी। ह्वेनसांग ने नगर के दक्षिण–पूर्व स्थित घोषिताराम विहार का भी उल्लेख किया है। इसके मध्य में बुद्धदेव का एक विहार और एक स्तूपहै जिसमें तथागत के नख और बाल संचित हैं। इसके अतिरिक्त तथागत के स्नानगृह का खण्डहर भी विद्यमान है। ह्वेनसांग के अनुसार इस विहार से 100 कदम की दूरी पर चारो बुद्धों के चलने–फिरने और बैठने इत्यादि के चिन्ह पाये जाते हैं। संघाराम के दक्षिण–पूर्व वाले दो खण्ड बुर्ज के ऊपरी भाग में ईंटों की एक गुफा है जिसमें वसुबंधु बोधिसत्व रहते थे। इस गुफा का प्रयोग उसने विद्यामात्र, सिद्धिशास्त्र, हीनयान सम्प्रदाय के सिद्धान्तों का खण्डन करने और विरोधियों का मुखमर्दन करने के लिए किया था। इसके निकट ही सम्राट अशोक द्वारा निर्मित 202 फुट ऊँचा एक स्तूप था जिसके पास स्तूप बुद्धदेव के स्मृति चिन्हों, नख तथा बालों से युक्त है और तथागत भगवान के इधर–उधर चलने–फिरने केबहुत से चिन्ह भी वर्तमान में हैं। इसी स्थान पर रोग से पीड़ित

वर्णानुसार (द्वितीय शताब्दी ई0पू0 में) कौशाम्बी के घोषिताराम के 30 हजार भिक्षु गुरूधंरमरक्खित नामक भिक्षुकी अध्यक्षता में अनुराधापुर के स्तूप महाविहार के शिलान्यास महोत्सव में भाग लेने के लिए लंका गये थे। पावरिकाबवन नामक एक अन्य विहार घोषिताराम के पूर्व में स्थित था। ह्वेनसांग ने इस विहार की पुरानी बुनियादों को देखा था। बदरिकाराम नामक एक अन्य विहार कौशाम्बी में था। सारत्थप्पकासिनी के अनुसार बदरिकाराम की दूरी घोषिताराम सेकरीब दो मील थी। महाराज वैश्रवण के कोसम अभिलेख में से कोसम के समीप स्थित बतलाया है। यह एक बौद्ध विहार था। जहाँ एक बार बुद्ध जी भी ठहरे थे। इसके अलावा कौशाम्बी में कुक्कुटाराम और परिव्राजकाराम नामक विहार भी थे। परिव्राजकाराममें आनन्द ने अपने ठहरने की चर्चा भगवान बुद्ध से की थी। ये दोनो विहार घोषिताराम के क्रमशः दक्षिण–पूर्व और पूर्व में स्थित थे। यमुना के तट पर स्थित होने के कारण यहाँ पर वाणिज्य का पर्याप्त विकास हुआ। इसलिए इसेलोग 'वत्सपत्तन' कहते थे। कौशाम्बी बौद्धयुगीन उत्तर भारत का सर्वप्रथम व्यापारिक केन्द्र था। दक्षिण–पश्चिम औरउत्तर–पश्चिम से आने वाली सड़कें कौशाम्बी में मिलती थीं। गंगा केमैदान का दक्षिणीपथइन्द्रप्रस्थ से मथुरा होता हुआ इलाहाबाद के समीप कौशाम्बी पहुँचता था और वहाँ से चुनार आता था। सड़क के इस भाग पर वत्सों का प्रभाव था। वत्सों की राजधानी कौशाम्बी से एक सीधा रास्ता उज्जैन को जाता था इन्हीं प्रमाणों के आधार पर 'रीज डेविडस' का विचार है कि बुद्धके काल में प्रमुख नदी पत्तन होने के कारण कौशाम्बी व्यापार का प्रमुख केन्द्रबन गया था। विनय चुल्लवग्ग (खण्ड–12) में भिक्षुओं द्वारा स्थल यात्रा का वर्णन मिलता है। इसमें ये भिक्षु कौशाम्बी से अहोगंग पब्बत, संकिसा, कान्यकुब्ज, उदुंबर और अग्गलपुर होते हुए सहजाती पहुँचते थे। कुछ भिक्षुओं का नाव द्वारा वैशाली से सहजाती जाने का भी उल्लेख मिलता है। अहोगंग पब्बत जैसा कि नाम से विदित होता है, पर्वत या नदी के समीकृत किया जा सकता है। अन्य पालि ग्रंथों में भी अहोगंग से नाव द्वारा पाटलिपुत्र की यात्रा का वर्णन है। यात्रा मार्ग पर अवस्थित होने के कारण कौशाम्बी प्राचीन भारत का महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र था। बौद्ध साहित्य से कौशाम्बी पर शासन करने वाले राजाओं की जानकारी भी मिलती है। बुद्ध के शासनकाल में कौशाम्बी उदयन के शासनाधीन थी। अपने राज्य के प्रारम्भ में उदयन बौद्ध धर्म का विरोधी था। पालि साहित्य में पिंडोल भारद्वाज द्वारा उदयन को बौद्ध धर्म में दीक्षित करने का उल्लेख है। मज्झिमनिकाय में उदयन के उत्तराधिकारी बोधि का वर्णन आताहै। उसने एक भव्य राजप्रसाद बनवाकर गौतमबुद्ध को वहाँ आमंत्रित किया था। पुराणों एवं पालि ग्रंथों में बोधिके उत्तराधिकारियों का उल्लेख मिलता है। कौशाम्बी में बौद्ध धर्म के साथ–साथ जैन धर्म का भी विकास हुआ। कौशाम्बी के पास पभोसा (प्रभाषगिरि)नामक स्थान से दो अभिलेख प्राप्त हुए हैं जिनसे पता चलता है कि आषाढसेन की संरक्षता में जैन मुनियों का एक संघ यहाँ रहता था इसी स्थान से प्राप्त खुदाई में जैन प्रतिमाओं से भी इस बात की पुष्टि होती है कि यहाँ ईसा के पूर्व ही जैन धर्म का अत्यधिक प्रचार हो चुका था। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी पभोसा नामक स्थान काउल्लेख किया है। ह्वेनसांग लिखते हैं कि यहाँ पर गुफा में बहुत से जैन मुनि निवास करते थे। कौशाम्बी छठे जैन तीर्थंकर पदमप्रभु की जन्मस्थली था। यहाँ से पद्मप्रभु की प्रतिमा प्राप्त हुई है। यह प्रतिमा

है। हर्ष की रत्नावली में उदयन का वर्णन वत्सों के राजा के रूप में किया गया और वत्सपत्तन (स्पष्टतया कौशाम्बी का दूसरा नाम) उसकी राजधानी बताया गया है। छठी शताब्दी ई0पू0 में कौशाम्बी चार महत्वपूर्ण नगरों में एक था। बुद्ध के समय में उत्तर भारत में छः प्रधान शहर थे– चम्पा, राजगिरि, वाराणसी, साकेत, श्रावस्ती और कौशाम्बी। वत्स महाजनपद सोलह महाजनपदों में एक था। पुराणों में उन राजाओं की एक सूची दी गयी है जिन्होंने उदयन के पूर्व कौशाम्बी में राज किया था। उदयन निचक्षु के पश्चात वंश परम्परा में सत्रहवें थे। जब गौतम बुद्ध श्रावस्ती में थे तो कौशाम्बी के तीन बैंकरों से मिले थे जिन्होंने भगवान बुद्ध से कौशाम्बी आने का आग्रह किया जिसे गौतम बुद्ध ने स्वीकार कर लिया।गौतम बुद्ध स्वयं सम्बोधि प्राप्ति के छठे और नवे वर्ष इस प्रसिद्ध नगर में आये थे और यहाँ उन्होंने कई प्रवचन दिये और इस स्थान के विहारों की जीवन पद्धति को सुदृढ़ बनाया जिससे यह स्थान बौद्ध धर्म का एक प्रमुख केन्द्र बन गया। उदयन के बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बाद नगर के एक धनी सेठ ने धोषिताराम विहार का निर्माण कराया था। यहाँ पर एक महल (जो शायद उदयन का ही था) का खंडहर पाया गया है जिसकी बड़ी–बड़ी दीवाले चूने के गारे से जुड़े हुए बड़े–बड़े पत्थर के टुकड़ों से बनी हुई थीं। इस महल की पूर्वी दीर्घा (गैलरी) सम्भवतः मेहराबदार छत से ढकी हुई थी, जो उत्तर से दक्षिण की ओर जाने वाली दो दीवालों के सहारे खड़ी थी और सम्भवतः इस महल के उत्तर की ओर सुरक्षा के लिए एक सूखी खाई भी बनी थी। बुद्ध के समय में कौशाम्बी में याउसके निकट बौद्ध मतानुयायियों के चार संगठन अथवा बस्तियाँ थीं। बौद्ध साहित्य में कौशाम्बी नगर का विस्तृत वर्णन मिलता है। पांचवी शताब्दी ई0पू0 से पहली शताब्दी ई0 तक कौशाम्बी बौद्ध धर्म एक प्रमुख केन्द्र रहा। जैसाकि पहले कहा गया है कि कौशाम्बी महानगरों में एक था यहीं पर महात्मा बुद्ध को उनके शिष्य आनन्द ने महापरिनिर्वाणप्राप्तकरने के लिए प्रेरित किया था। महात्मा बुद्ध ने अपना नौवां वर्षावास कौशाम्बी में बिताया था और यही से कुरू राष्ट्र जाकर उन्होंने अनेक व्याख्यान भी दिये थे। कौशाम्बी में भिक्षुओं और भिक्षुणियों के निवास करने की भी चर्चा मिलती है। बौद्ध ग्रन्थों में घोषितराम, कुक्कुटराम, पावारिकाबवन (प्रावारिक आम्रवन) तथा बदरिकाराम आदि कौशाम्बी के प्रसिद्ध विहारों का उल्लेख है। यह विहार कौशाम्बी में निवास करने वाले तीन प्रसिद्ध सेठों घोषित, कुक्कटऔर पावरिक द्वारा बनवाये गये थे और इन विहारों का नामकरण भी इन्हीं के नाम के आधार पर हुआ था। कौशाम्बी के उत्खनन से एक अभिलेख प्राप्त हुआ है जिसमें घोषितराम को कौशाम्बी की सीमा पर दक्षिणी–पूर्वी कोने में स्थित बतलाया गया है। यह विहार बुद्ध के निर्वाण के पश्चात भी आनन्द का प्रिय आवास था। यहाँ सारिपुत्र, महाकाच्चायन औरउपवाण के भी कई बार आने का उल्लेख मिलता है। एक अवसर पर भगवान बुद्ध अनुपिया छोड़ने के पश्चात कौशाम्बी में आये और इसी विहार में रूके थे। पिंडोल भारद्वाज जिसने उदयन को बौद्ध धर्मावलम्बीबनाया था, इसी घोषिताराम में निवास करते थे। ये कौशाम्बी नरेश उदयन के राजपुरोहित के पुत्र थे। उदयन और पिंडोल भारद्वाज में धार्मिक विषयों पर एक वार्ता भी हुई थी। भगवान बुद्ध के शिष्य तस्यथेर, जो एक गृहपति पुत्र थे, और कौशाम्बी में पैदा हुए थे। घोषिताराम में ही निवास करते समय भगवान बुद्ध ने धम्म विनय आदि विषयों पर प्रवचवन दिया था। महावंश के

उल्लेख बतलाया गया है।महाभारत में युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ करते समय वत्सभूमि को विजित करने का उल्लेख है। एक अन्य स्थल पर कर्ण द्वारा वत्य राज्य को जीतने का उल्लेख आया है। एक अन्य उद्धरण में हैहयों द्वारा हर्यश्व का वध करके वत्स राज्य को जीतने काविवरण है। इसके अतिरिक्त कुरूक्षेत्र केऐतिहासिक युद्ध में पाण्डवों की ओर से काशी और वत्सों के युद्ध करने का उल्लेख भी मिलता है। कौशाम्बी का वर्णन दीर्घ निकाय के महापरिनिब्बान सुत्त तथा महासुदस्सन सुत्त में मिलता है, जिसमें इसे बुद्धकालीन भारत के 6 महानगरों (चम्पा, राजगृह, श्रावस्ती, कौशाम्बी, साकेत तथा वाराणसी) में बताया गया है। इस नगर का सर्वप्रथम उल्लेख वैदिक साहित्य (शत्पथ ब्राह्मण) में मिलता है। शतपथ ब्राह्मण में कौशाम्बी निवासी के रूप में प्रोतिकोसुरविंदी (उद्दालक आरूणि के एक शिष्य) को बताया गया है। महाभारत के अनुसार चेदि राजा उपरिचर बसु के तीसरे पुत्र कुशाम्ब द्वारा कौशाम्बी नगर की स्थापना की गयी है। मत्स्य पुराण में कहा गया है कि जब हस्तिनापुर (जिला मेरठ) गंगा द्वारा बहा ले जाया गया तब कुरू अथवा भरतवंशी राजा निचक्षु (अर्जुन के पौत्र परीक्षित की वंश परम्परा के पांचवे) ने हस्तिनापुर को त्याग दिया और कौशाम्बी में निवास करने चले आये। वंसत्थप्यकासनीके अनुसार सूर्यवंशी राजाओं के विभिन्न राजवंशों ने भी कौशाम्बी में शासन किया था परमात्थजोतिका में कौशाम्बी के नामकरण के सम्बन्ध में बताया गया है कि यह स्थान मूलरूप से ऋषि कोशाम्ब का निवास स्थान था इसलिए इसका नाम कौशाम्बी पड़ा। बौद्ध लेखक बुद्धघोष के अनुसार इस नगर को बसाने के लिए कोशाम्ब के वृक्षों को उखाड़ा गया था इसलिए इसका नाम कौशाम्बी पड़ गया और कुछ इतिहासकारों के अनुसार इसका नाम कौशाम्बी इसलिए पड़ा क्योंकि इस नगर का निर्माण कुशाम्ब नामक ऋषि के आश्रम के निकट हुआ था। इस सम्भाग में पाये गये अनेक ऐतिहासिक शिलालेखों, मुहरों एवं सिक्कों पर भी कौशाम्बी का नाम अंकित है। यहाँसे प्राप्त मूर्तिकला एवं वास्तुकला सम्बन्धी अनेक अवशेषों, मिट्टी की छोटी–छोटी मूर्तियों तथा अन्य स्मृति चिन्हों से इस बात का संकेत मिलता है कि कौशाम्बी नगर उत्तम कलाओं का महान केन्द्र था जिससे उस समय के लोगों की कला सम्बन्धी अभिरूचि का परिचय मिलता है तथा साथ ही साथ उस समय के कलाकारों एवं शिल्पकारों द्वारा अर्जित की गयी शिल्पीय श्रेष्ठता के उच्च स्तर का भी पता चलता है। पुराणों में कौशाम्बी पर शासन करने वाले राजाओं की वंशावलियाँ दी गयी हैं। यहाँ उल्लेख आता है कि जब गंगा की बाढ़ द्वारा हस्तिनापुर बहा दिया गया तब भरतवंशी शासक निचक्षु (जो कि अर्जुन के पौत्र परीक्षित के पाँचवेवंशज थे)

कौशाम्बी आकर बस गये। इस वंश के 25 शासकों का उल्लेख पुराणों में आया है, जिन्होंने कौशाम्बी पर शासन किया था। कौशाम्बी नगर का जनक (कुरू राजवंश के शासक)के समय भी अस्तित्व था। शतपथ ब्राह्मणमें प्रीतीकौशाम्बेय को उद्दालक आरूणि का समकालीन बताया गया है, जो जनक की सभा में आया करते थे। अतः यह स्पष्ट है कि कौशाम्बेय जनक के समकालीन थे तथा कौशाम्बी पर अनेक राजाओं ने शासन किया था इस वंश के अन्तिम शासकों में सबसे प्रसिद्ध उदयन था, जो बुद्ध का समकालीन था। इस शासक का उल्लेख स्वप्नवासवदत्ता एवं प्रतिज्ञायोगंधरायण में भी आया है जिसमें उसे भरत कुल का वंशज कहा गया

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

वत्स महाजनपद के पुरावशेषों का ऐतिहासिक अनुशीलन

संजू सिंह
शोध छात्रा इतिहास विभाग
वी0एस0एस0डी0 कालेज, कानपुर

वत्समहाजनपद प्राचीन भारत के 16 महाजनपदों में से एक था इसकी राजधानी कौशाम्बी थी। इस महाजनपद के अन्तर्गत आधुनिक उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद तथा मिर्जापुर जिले आते है। कौशाम्बी यमुना नदी के तट पर स्थित है। कौशाम्बी जिला उत्तर प्रदेश के दक्षिणी भाग पर स्थित है जिसके पूर्व में इलाहाबाद जिला, पश्चिम में फतेहपुर, दक्षिण में चित्रकूट और उत्तर में प्रतापगढ़ जिला है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 1903.17 वर्ग किमी0 है। कौशाम्बी के निर्देशांक 25031'26'' उत्तरी अक्षांश और 81023'41'' पूर्वी देशान्तर.है। यह एक पुराना शहर है जो इलाहाबाद के पश्चिम में लगभग 55 किमी0 यमुना नदी के उत्तरी तट पर स्थित है।कौशाम्बी की पहचान आधुनिक कोसम नामक स्थान से की गयी है। इसके समीकरण के सन्दर्भ में यहीं से प्राप्त सम्वत् 1921 (1565 ई.) के एक स्तम्भ लेख का उल्लेख भी समीचीन होगा जिसमें 'कौशाम्बीपुरी' का नाम आया है। इस लेख में इस नगर के सुवर्णकारों के कल्याण के लिए प्रार्थना की गयी है। इससे ज्ञात होता है कि इस लेख के प्राप्ति स्थान कोसम का ही पूर्व नाम कौशाम्बी था। कोसम के समीप स्थित पभोसा (प्रभाषगिरि) ग्राम से प्राप्त एक प्रस्तर खण्ड के ऊपर संस्कृत में एक लेख ''कौशाम्बी नगर बाह्य प्रभासाचतोपरि'' मिलता है, जिससे ज्ञात होता है कि प्रभाषगिरि(आधुनिक पभोसा) कौशाम्बी नगर के समीप था। पभोसा से कौशाम्बी का समीप्य इस नगर के साथ उसकी एकता निश्चित करता है। हाल के पुरातात्विक अन्वेषणों में घोषिताराम के अवशेषों कीप्राप्ति के पश्चात प्राचीन कोसम के साथ इस नगर की पहचान के सन्दर्भ अब कोई संशय नहीं रह जाता है। 16वीं शती तक आधुनिक कोसम प्राचीन कौशाम्बी की स्मृति संजोए हुए था। कोसम से प्राप्त संवत 1621 (1564ई0) के प्रस्तर स्तम्भलेख में प्राचीन कौशाम्बीपुरी का उल्लेख है जो इन दोनों समीकरण का एक पुष्ट प्रमाण प्रस्तुत करता है। कौशाम्बी यमुना नदी के किनारेपर स्थित था संयुक्त निकाय से पठ्म–दारूक्खंध सुप्त में कौशाम्बी को गंगा नदी के तट पर स्थित बतलाया गया है, जो स्पष्टतः भ्रामक है। मनोरथपूरणी (संयुक्त निकाय में वर्णित) वक्कुल की कथा के आधार पर कौशाम्बी की स्थित यमुना नदी के तट पर वर्णित है। इसका समर्थन कनिघंम (ऐशेन्ट ज्योग्राफी ऑफ इण्डिया) ने भी किया है। कौशाम्बी की स्थिति के सन्दर्भ में परस्पर विरोधी मत प्रचलित हैं। चीनी यात्री के यात्रा विवरणों से इसकी स्थिति का ज्ञान होता है। फाह्यान सारनाथ से कौशाम्बी की दूरी 13 योजन बतलाता है जबकि ह्वेनसांगप्रयाग से कौशाम्बी की दूरी 500 ली (100मी0) बतलाता है जोकि अतिरंजित है। फाह्यान द्वारा निर्दिष्ट दूरी सत्य के अधिक समीप प्रतीत होती है। कनिघंम ने इलाहाबाद से इसकी दूरी 38मील बतलाई है। कौशाम्बी के सन्दर्भ में सबसे प्राचीन उद्धरण 'शतपथ ब्राह्मण में मिलता है। महाकाव्यों में इस नगर का